ારીતમાં

BVP-1050-4/11/17

(A) -945- 1/10

सर्वाधिकार सुरक्षित हैं

नमीं चेतना पुस्तक-मालां दा नौमां फुल्ल

दादी ते मां

(नमियें कवतें दा संग्रह)

दीनू भाई "पन्त"

परिचय

वेद पाल 'दीप' एम. ए.

—:o:—

डोगरी संस्था जम्मू

१९५९

—:प्रकाशक:—

डोगरी संस्था

जम्मू ।

प्रथम संस्करण—१०००

मूल्य चार आने

—:मुद्रक:—

विजय प्रिंटिंग प्रेस,

मोती बाज़ार,

जम्मू ।

दीनू भाई पन्त

दिनू भाई "पन्त"

दीनू भाई पन्त की कविता जाग्रति की यथार्थवादी कसौटी भी है और पथ निर्देशक भी। पन्त जी की नवीनतम रचनाओं का प्रस्तुत संग्रह उस आदर्श का परिचायक है जिसमें जन साधारण की समस्याओं को जन साधारण की भाषा में चित्रित किया जाता है। यह विचार अब साहित्य के सभी क्षेत्रों में स्वीकार किया जा रहा है। ऐसा ही साहित्य समाज के प्रगतिवादी परिवर्तनों में सहायक सिद्ध होता है। दीनू भाई पन्त की कविता की भाषा और भाव-धारा इस कसौटी पर पूरे उतरते हैं।

आज यह विवाद ज़ोरों पर है कि 'अस्थायी' साहित्य का अधिक मूल्य नहीं होता। यह भी कहा जाता है कि समाज में परिवर्तन हो रहे हैं, जीवन के मूल्य बदल रहे हैं, मानवजाति के छोटे २ प्रश्नों को लेकर जो कुछ लिखा जा रहा है वह साहित्य में अमर नहीं रहेगा। रोटी, कपड़ा, मकान अथवा राजनीति सम्बन्धी समस्याओं का विवरण समय बीतने पर फीका पड़ जाता है। हमें इन झमेलों से ऊपर उठकर शुद्ध साहित्य की रचना करनी चाहिए। कवि दैवी शक्ति का मालिक है, उसे इन छोटे २ झगड़ों से ऊपर रहना चाहिए। इत्यादि।

इस में सन्देह नहीं कि साहित्य में नारेबाज़ी को कोई स्थान नहीं मिलना चाहिए और कला कलात्मक दृष्टि से उत्कृष्ट होनी चाहिए, किन्तु यदि कला के इस निरवलेप रूप के लिए कवि को अपने मौलिक भावों का गला घोंटना पड़े तो यह साहित्य के मूल सिद्धन्तों के सर्वथा प्रतिकूल होगा।

समय समय पर समाज में होने वाली घटनाओं को कवि नज़र-अन्दाज़ नहीं कर सकता क्योंकि उनका मानव जीवन से सीधा सम्बन्ध है और समाज व्यापी अनन्त परिवर्तन की वे भी एक कड़ी होती हैं।

यह धारणा भी गलत है कि कवि कोई दैवी प्राणी है। कवि को समाज के सामूहिक जीवन से अलग नहीं किया जा सकता। यदि वह सामाजिक जीवन से अलग रहने का यत्न करेगा तो उसकी कविता केवल थोथी कल्पना ही रह जाएगी। समाज के संघर्ष का कंचन उसे प्राप्त नहीं होगा, वह केवल नकली गहने ही घढ़ सकेगा।

कवि समाज में हो रहे परिवर्तनों, लोगों की आवश्यकताओं तथा प्रवृत्तियों को आंकता है और उन्हें व्यवस्थित रूप देकर जनता के सामने रखता हैं। यदि वह ऐसा न करके केवल रहस्यवाद में उलझ जाए तो उसकी कृति एक कृत्रिम प्रयत्न बन कर रह जाती है जिसका आनन्द केवल इने गिने लोग ही ले सकेंगे।

साथ ही साथ हमें इस भूल से भी बचने की आवश्यकता है कि कविता को केवल "किसान मजदूरों" की क्रान्तिकारी ललकारों

तक ही सीमित न कर दिया जाए। श्रमिक वर्ग की समस्याओं को सुलझाने के लिए बड़ी गम्भीरता की आवश्यकता है। अपनी कवि-विभूति के प्रदर्शन के लिए "ललकारों" का आश्रय लेना श्रमजीवियों को प्रभावित नहीं करता। इस सम्बन्ध में हमारी दोषपूर्ण नीति से देश के साहित्यिक आन्दोलनों को भारी क्षति पहुँची है। साहित्य समूचे समाज का है। विश्व और मानव जाति की स्वतन्त्रता, शान्ति, मानव प्रेम इत्यादि सार्वभौमिक भावनाओं में योग देने वाले सभी वर्गों की काव्य द्वारा तृप्ति होनी चाहिए।

साहित्य स्वस्थ होकर मानव-जीवन को स्फूर्ति दे और उसकी नाड़ियों में यथार्थवादी सत्य का रक्त बहाए, यही साहित्य का उद्देश्य होना चाहिए। इसमें रूढ़ीवाद और कट्टर पन्थी नीति दोनों दोष पूर्ण हैं।

यदि एक "अस्थायी" मूल्य की पंक्ति भी तात्कालिक समाज के मन में कोई परिवर्तन लाने में समर्थ है तो उस परिवर्तन द्वारा नवजीवन पाने वाले समाज के लिए वह पंक्ति अमर हो जाएगी। प्राचीन युग की महान कृतियों को ध्यान में रख कर हम वर्तमान युग के साहित्य से निरुत्साहित क्यों हों जब कि वे भी अपने समय की आवश्यकताओं और आन्दोलनों की प्रतीक थीं। प्राचीन चिन्तकों और कवियों ने उस समय के मानव समाज की विभिन्न प्रवृत्तियों, विचार धाराओं और व्यवस्थाओं को ही काव्यमयी वाणी में व्यक्त किया था। यदि आज का साहित्य उतना उत्कृष्ट नहीं तो हमें आज के संक्रान्तिकाल की विषमताओं और अन्य त्रुटियों में इसका कारण ढूंढना चाहिए। जीवन की वास्तविकताओं से घबरा कर कवि को उन से दूर भाग कर निराधार कल्पना के रम्य महलों में आश्रय नहीं लेना चाहिए।

दीनू भाई पन्त पलायनवादी नहीं। उन्हाने तो समाज की विषमताओं से भिड़ जाने का पथ अपनाया है। इनकी पूर्व की कृतियां इस बात का प्रमाण हैं कि समय समय पर इन्होंने जो भी लिखा, समाज की घटनाओं ने उन्हें आगे चलकर सत्य सिद्ध किया। दीनू भाई पन्त कोई "ज्योतिषी" नहीं बल्कि उनकी इस दूरदर्शिता की जड़ें उनकी मानव मात्र में श्रद्धा की भावना और समाज के बारे में एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण में निहित हैं।

प्रस्तुत संग्रह में पुराने रूढ़ीवादी समाज की वर्ग-व्यवस्था की विषमताओं का कवि ने मार्मिक वर्णन किया है। इन कविताओं को समझने के लिए रियासत के पिछले कई सालों में हुए जनता के संघर्ष की पृष्ठभूमि को ध्यान में रखना आवश्यक है, जिसके बारे में स्थानाभाव के कारण इस भूमिका में अधिक नहीं लिखा जा सकता।

समाज के मध्यम वर्ग की दयनीय दशा और झूठे व खोखले गर्व पर कवि ने "जां इद्दर हो, जां उद्दर हो" कविता में बड़ा मार्मिक व्यंग्य किया है। यह व्यंग्य मध्यम वर्ग के प्रति कवि की सहानुभूति से ओत प्रोत है। यह बात उल्लेखनीय है कि कवि ने "कवि-कहानीकार लखारी" को ही इस व्यंग्य का निशाना बनाया है जो कि कवि का अपना ही रूप हैं। यह कविता कवि के अपने मन का विश्लेषण भी है और उसके अपने वर्ग से सम्बन्धित "दफतर के बाबू" "छोटे दूकानदार" "अध्यापक" इत्यादि के जवीन की तसवीर भी। मध्यम वर्ग के प्राणी उनपर ही किये कटाक्षों द्वारा हंस हंस कर जब थक जाते हैं तो उन गम्भीर क्षणों में कवि अपनी बात कह देता है कि इस निज़ाम में उनका निर्वाह नहीं हो सकता, "इसी बदले बिन कोई चारा नई" "ऐमें इनें कालें दुख्खें पर

मेदें दे पोचे पोचा दैं।" "तू कानी-काकल साम्बी लैं, अस सांग दराटी लेई लैचै, ए जुग कुन हुन्दा नेईं बदलै, इसी झट्ट फराटी देई लैचै।"

कवि ने नारेबाज़ी से परहेज़ किया है। समाज के शासक वर्ग को वह सभी श्रमजीवियों का प्रतिनिधित्व करते हुए एक दूसरी कविता में कहता है:- "सम्यान करी दे बिन्द सारा कुल्ली जुल्ली ते चुल्ली दा। लेखा टब्बरा दा लाई लै तूं भाएं रुक्खी सुकमसुकी दे। तूं कम्म करा ते रुट्टी दे॥" कवि के कहने का ढंग समुचित तर्क पूर्ण और स्वाभाविक है। कोई बात उसने ऐसी नहीं कही ज़ो वर्तमान व्यवस्था में असम्भव हो। इसी कारण जनता इनसे प्रभावित हुई है और पन्त की ऐसी रचनाएं उनमें लोकप्रिय हुई हैं।

"कैदी बसन्त ते कोदी बसन्त" में कवि ने देश के कर्णधारों को सावधान किया है जिन्होंने अपनी आरम्भिक सफलताओं से ही संतोष प्राप्त कर लिया है:- "दुक्खें दा अन्त न भुक्खें दा अन्त, फुल्लें दी होग, जा ब्हारें दी होग, कोठियें बंगलें कारें दी होग। साड़ी नेईं अजें फिरी दी ब्हार, साड़ी नेइयों अजें आई बसन्त।"

धीरे २ कवि इसी परिणाम पर पहुँचा है कि जनता की वर्तमान दुर्दशा का मूल कारण समाज की पूंजीवादी आर्थिक व्यवस्था है:— "ए बैड़ा दूएं दी कमाई खान गिज्जे दा," (अड्ब बैड़ा)। इस निज़ाम को बदलना एक व्यक्ति का काम नहीं:- "इक्कला नि हत्थ पायां, साथियें गी सद्दी लै।"

इस सामाजिक द्वन्द्व के परिणाम स्वरूप एक नया डुग्गर, नयी संस्कृति और नई सभ्यता का उदय हो रहा है इसका कवि की दूसरी कविताओं में संकेत मिलता है। आज तक समाज की जो कहानी और जो इतिहास लिखा गया वह जनता का नहीं था। उसका श्रीगणेश तो अब हो रहा है। नए डुग्गर के जन्म के साथ जनता

के नए युग के साथः— "चुड़े पुड़े दा फोसड़ पुलखर, तुन्दा डुग्गर मुक्कै करदा। नमां नवेला साड़ा डुग्गर, सिर अपना ऐ चुक्का करदा।"

"कम्म करना सिख देसा, उठ अड़ेया उठ, ओ! कम्म कीते बाज तेरा मिटना नेईं दुख ओ!" "अक्कली दी मार, नेइयों देवतें दा खुट्ट ओ।"

इस नये डुग्गर के उदय होंने से जनता के बीच नई जागृति पैदा हुई, जिसका सब से बड़ा प्रमाण उसके मन में अपनी मातृभाषा के प्रति गौरव और ममता में वृद्धि है। डोगरी भाषा में पिछले कुछ सालों में डोगरी संस्था के प्रयत्नों द्वारा न केवल कई पुस्तकें प्रकाशित हुईं अपितु नये २ कवि क्षेत्र में आए। डोगरी भाषा को राज्य के शिक्षा केन्द्रों में तथा समाज में न्यायोचित सम्मानपूर्वक पद दिलाने के संघर्ष में जनता ने संस्था को सरगर्म सहयोग दिया है। कई पक्षों से डोगरी की हिन्दी के प्रति स्पर्धा की भावना फैलाकर इसे क्षति पहुंचाने का प्रयत्न भी हुआ। इसी कटुता को दूर करने के लिए कवि ने एक कविता में हिन्दी और डोगरी का दादी और मां जैसा सम्बन्ध स्थापित किया है। "हिन्दी ते डोगरी दा झगड़ा गै कैदा, दादी दा ते माऊ दा मकाबला गै कैदा। हिन्दी साड़ी दादी ऐ ते डोगरी सै मा। दादी थार दादी ऐ ते माऊ थार मा।"

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि कवि सामाजिक समस्याओं से अनभिज्ञ नहीं और उनको हल करने में सदा जागरूक है। उसकी काव्य-शक्ति नुक्ताचीनों और विरोधियों को भी संतुष्ट करने में समर्थ हैं, कम से कम मेरा तो यही अनुभव है॥

—वेद पाल दीप

जां इद्दर हो, जां उद्दर हो!

तूं कुन ए की खड़ोता दैं,
के बिच्च चरस्तै सोचा दैं ?
जां इद्दर हो जां उद्दर हो,
होरनें[1] दा रस्ता रोका दैं ?

टल्ले तेरे भाएं घस्से दे पर चिट्टे बस्से-रस्से दे।
थाएं थाएं दा सीता दा बूटै गी पालश कीता दा।
के होया बोजे फट्टे दे कोटै दे अन्दर खट्टे दे।
पैंटै दे पिच्छें टाकी ए मिलदी-जुलदी ए खाकी ए।
कोई पढ़े-लिखे दा सेई[2] हुन्नैं भुल्ले[3] दे अक्खर घोखा दैं ?

जां इद्दर हो, जां उद्दर हो।
होरनें दा रस्ता रोका दैं !

---

(1) दूसरों का (2) मालूम होते हो (3) भूले हुए अक्षर याद कर रहे हो।

जां दफतर दा कोई बाबू ऐं चड़ी गेआ कुसै दे काबू ऐं ?
जां कच्ची चड़ी ध्याड़ी[1] ऐ घर गालीं दिन्दी लाड़ी ऐ ?
कोई जागत-पूगत कसरी[2] ऐ जां भारू[3] बैठा पसरी[4] ऐ ?
जां पी कराया बाकी ऐ टल्लें गी रोन्दी काकी ऐ ?
जां घट्ट नेई तनखाई च म्हीन्ने दे जोखन जोखा दैं ?

जां इद्दर हो, जां उद्दर हो।
होरनें दा रस्ता रोका दैं।

नौकर ऐं कुसै बपारी दा जां मुंशी कुसै कचैहरी दा ?
जां जैरट एँ कुसै बकीलै दा गाहकें[5] दे कील्हन कील्है दा ?
जां जोर जुआनी देई आयैं पिनशन जमेदारी लेई आयैं ?
जां मोत्तल[6] कोई पटवारी ऐं कवि कहानीकार लखारी ऐं ?
जां खादे भंग-पकौड़े नीं फीमै[7] दियां झोकां झोका दैं ?

जां इद्दर हो, जां उद्दर हो।
होरनें दा रस्ता रोका दैं !

---

(1) दिन (2) बीमार (3) लेनदार (4) तकाज़े कर रहा है (5) गाहकों को फंसा रहे हो (6) मोअत्तल (7) अफीम की।

कोई लौकी हट्टी बाला ऐं शौकारें कीता काहला[1] ऐं ?
जाँ रास बी बेची खाई बैठें हुन कहुन लगा दोआला[2] ऐं ?
किछ बनी कुते कोई फाई[3] ऐ जां कूञी कुते गोआई ऐ ?
जोड़ेदी मेख ऐ डंगेदी जां भंगन पैसे मंगे दी ?
जां अमल चड़ी आया कच्चा बीड़ी दे टोटे तोसा[4] दें ?

जां इद्दर हो, जां उद्दर हो।
होरनें दा रस्ता रोका दें !

अजें उमर तेरी बड़ी लौकी ऐ बालें चिटेआई[5] कोकी[6] ऐ ?
पढ़दे-पढ़दे बगेथाए[7] नीं, जां फिकरें[8] धौले आए नीं ?
पेशा तेरा उस्तादी ऐ जां होर गै कोई उपाधी ऐ ?
ट्यूशन दे पैसे फसी गे जां पढ़ने वाले नस्सी गे ?
जां बड्डी कुड़ी कुआरी दे दाजै[9] दे भोखन मोखा दें ?

जां इद्दर हो, जां उद्दर हो।
होरनें दा रस्ता रोका दें !

---

(1) व्याकुल (2) दीवाला (3) विपत्ति (4) ढूंड रहे हो (5) सफेदी (6) कौन सी (7) सफेद किए हैं (8) फिकर से (9) दहेज की चिन्ता कर रहे हो।

कुतै करनैं कम्म मनीमी दा जां लौकी मुट्टी कीहूमी[1] दा ?
कुसै पासै मजमा लाना ई कोई माहूतड़[2] ठग्गी खाना ई ?
फेरी, छाबा जां डैस नेश्रा किश होर भड़िम्बा[3] रच्चै दा ?
सच्ची गै लड़दी लाड़ी बी तूं पौन्नैं अक्के-पक्के दा ?
नां थल्लै ऐं नां उप्पर ऐं ी तूं बशकार टंगोचा दैं ?

जां इद्दर हो, जां उद्दर हो।
होरनें दा रस्ता रोका दैं !

तेरा श्रौह्दा हेड कलर्की ऐ जां एदे हा बी थल्लै ई ?
मिसलां गै लीकन सिक्खे दैं जां अकल बी थोड़ी पल्लै ई ?
त्वां[4] मोटर-गड्डी घूंकै[5] दी तां[6] भुक्खी खलकत सूंकै दी ?
जां कारें हेठ जलोई जागा जां भीड़ें हेठ चथोई जागा ?
कैसी बशकार खड़ोता दा मौती गी आले[7] ठोका दैं ?

जां इद्दर हो जां उद्दर हो।
होरनें दा रस्ता रोका दैं !

---

(1) हकीमी (2) मेरे जैसा भोला (3) आडम्बर (4) उस तरफ (5) तेज़ी से दौड़ रही हैं (6) इस तरफ (7) आवाज़ें दे रहे हो।

रेडा आ, लै झारी छिक हिसले दे टोटे पीनैं की ?
तूं बाबू एं किश गल्ल सुना उस पासै रूसै चीनै दी ?
कियां बाबू हाली[1] मजूर आो सारे किछ्छे होई उछ्छे
उनें कियां झट ध्याड़ें च सब दुख-दलिद्दर धोई सुट्टे ?
हाली मजूर अस[2]कन्नें[3]आं तूँ कीपी[4] मड़ा मसोसा[5] दैं ?

जां इद्दर हो, जां उद्दर हो।
होरनें दा रस्ता रोका दैं।

गुस्सै नेईं होना बाबू जी अस जट्ट-भुट्ट मस्ताने आं।
तुस आपूं बड़े सेयाने ओ सिद्दी नेईं गल्ल सुनाने आं।
इस बेलड़-खोर नजामै च इस[6]चाल्लीं होग गुजारा नेईं।
रोई-पिट्टी कम्म करो मरो इसी बदले बिन कोई चारा नेईं।
ऐमें[7] इनें काले दुक्खें पर मेदें[8] दे पोचे पोचा दैं।

जां इद्दर हो, जां उद्दर हो।
होरनें दा रस्ता रोका दैं!

---

(1) किसान (2) हम (3) साथ हैं (4) फिर (5) चिन्ता-मग्न हो (6) इस तरह (7) व्यर्थ ही (8) उमीदों के।

तू कान्नी[1] काकज साम्बी लैं   अस सांग[2] दराटी लेई लैचै ।
ए जुग कुन हुन्दा नेईं बदलै   इसी भट्ट फराटी[3] देई लैचै ।
पहले हत्थ जोड़ी, करनी ऐ   अरजी गै छन्दे छुन्नें[4] दी ।
जे सिद्दी चाली मन्नी जा   पी लोड़ के ऐ कलमुन्नें[5] दी ।
कायर एँ कोई तलेड़ू एँ   क्याड़ी[6] गी किसी खरोचा दैं ?

जां इद्दर हो, जां उद्दर हो ।
होरनें दा रस्ता रोका दें !

---

(1) कलम-कागज़ सम्भाल ले (2) किसानों के साधन (दराँती आदि) (3) घुमा दें (4) मिन्नत-समाजत (5) मुक्का (शक्ति) (6) गर्दन को ।

कम्म करा ते रुट्टी दे

—:०:—

कौल्लें[1] दे बूटे सुक्की गे मेदें दे धागे त्रुट्टी गे।
बस गल्ल हुन उक्की[2] मुक्की ए तूं कम्म करा ते रुट्टी दे।

तुन्दें इनें लारें-लप्पें[3] ने तकरीरें ने ते गप्पें ने।
खाकें नशकें ते कत्थें ने इनें सुक-मसुक्के हत्थें ने।
सगमां[4] ए धड़की बददी ऐ भुक्खागी भड़की लगदी ऐ।
तूं भुल्ली बैठैं खबरै की हुन हद्द होई गेई सबरै दी।
तूं उच्च संहासन जाई बैठा अस बलगी बलगी[5] हुट्टी गे।
तूं कम्म करा ते रुट्टी दे।

---

(1) वादों के (2) संक्षेप में (3) झूठी आशाएं दिलाने से (4) उल्टे (5) इन्तज़ार करते २।

छुड़का मी इनें कजीयें[1] हा इनें चीफें हा, इनें पीएं[2] हा ।
इनें ओवर सीयें डी०एँ हा मुट्टिये तनखाइये टी०एँ हा ।
ठेकेदारें दिएँ रीये[3] हा इनें चित्तरें हा,इनें सीये[4]हा ।
छुड़का मी इनें कसाइये हा लोट्ट गुज्जखोर पढ़ाइये हा ।
रैन्दा-सैन्दा सा-सत सारा ए भजेयां लुट्टी पुट्टी गे ।
तू कम्म करा ते रुट्टी दे ।

तुन्दी गै मेदा जरनेयां अज भी तुन्दे दम भरनेयां ।
जित्थें दस्सो टुरी चलनेयां जेड़ा आखो कम्म करनेयां ।
छड़ा जीने दा हक मंगनेयां झगड़ा नेईं बाफर-खुली[5] दा ।
सम्यान[6] करी दे बिन्द सारा कुली जुली ते चुली दा ।
लेखा टबरे दा लाई लै तूं भाएँ रुक्खी सुकसुक्की दे ।
तू कम्म करा ते रुट्टी दे ।

---

(1) जंजालों से (2) P. As (3) कितारों से (4) शेरों से (5 धन-सुख की अधिकता (6) सामान ।

तुस इन्नें कैसी संगे[1] दे, मुखतै[2] दी नेइयों मंगे दे।
अस जल्ले लूल्ले लंगे नेईं, कोई कायर ते भिखमंगे नेईं।
बेल्ले रौहना ई पाप बड़ा, ए बेरुजगारी सूली ओ।
जे इसदा कोइ बी लाजनेईं, तुस कुस बागै दी मूली ओ।
ए तूयैं करना पौना ईं, पाए कुतेआ[3] चाड़ी[4] चुक्की दे।
तूँ कम्म करा ते रुट्टी दे!

ओ सुखने कुत्थें डुल्ली[5] गे, ओ बादे कियाँ भुल्ली गे?
मैहलें दै अन्दर बस्से दैं, कमरें दै अन्दर छुप्पे दैं।
सिरकी ते परदे पुट्टी दे, ए मिसलाँ मुसलाँ सुट्टी दे।
बिंद नजरी कन्ने नजर मला, पी [6]बन्नी दे पाएँ जुट्टी दे।
तूँ कम्म करा दे रुट्टी दे!

---

(1) झिम्झक रहे हो (2) मुफ्त की (3) कहीं से (4) ऋण ले (5) घिर गए (6) फिर चाहे बान्ध दे या जकड़ दे।

कैदी बसन्त ते कोदी बसैन्त

कैदी बसन्त ते कोदी बसन्त,
दुक्खें दा अन्त नां भुक्खें दा अन्त ।
फुल्लें दी होग, जाँ तारें दी होग,
सैल्लियें पीलियें धारें दी होग ।
बागें ते जंगलें जांड़ें दी होग,
कोठियें बंगलें कारें दी होग ।

होग सरमायादारें दी होग,
जाँ इनें छटिया[1] वालें दी होग।
इन्दें गै चौं भ्यालें[2] दी होग,
माम्मे-भनें[3] जां सालें दी होग।
[4]साड़ी नेंईं अजें फिरी दी ब्हार,
साड़ी नेइयों अजें आई बसन्त।

कैदी बसन्त ते कोदी बसन्त ?

होग तां नमें अमीरें दी होग,
मिम्बरें, मैहतें, बजीरें दी होग।
लच्छेदार[5] तकरीरें दी होग,
सोहनियें शैल तसवीरें दी होग।
साहबें[6] दी होग जाँ मीमें दी होग,
उन्दियें शैल "सकीमें" दी होग।

---

(1) महन्तों (चौधरियों) (2) हिस्सेदारों की (3) भानजों की (4) हमरी ऋतु अभी नहीं बदली (5) मसालेदार (बनावट भरी) (6) नए साहबों की।

नारें -[1] खबारें जैकारें दी होग,
गद्दियें दे मेदबारें[2] दी होग।

असें चरोकने[3] इयै ने दिक्खे,
लारें दे ढोल, [4]लबाड़ें दे सैंख !

कैदी बसन्त ते कोदी बसन्त ?

भागें दे नेईं अस साहबें दे मारे,
मैनती हुन्दे बी बेरुजगारे।

साहबेंगी सुजदे चन्न ते तारे,
असेंगी लगदे ए अग्गी दे ङारे।

चिट्टियां चोटियां, सैलियां धारां,
तुन्दियां व्हारां ते साड़ियां ठारां।

तुन्दे ए भान्त - सबान्तड़े फुल्ल,
असेंगी दिन्दे न [5]गुल्लै पर गुल्ल।

---

(1) नारों अखबारों की (2) उमीदवारों की (3) देर से (4) झूठी आशाएं बन्धाने वाले गप्पियों की (5) जलन पैदा करते हैं।

साध भखारी ते ठग्ग न मैहन्त,
[1]सैहरी गी फाके ते लुरखीगीं तैन्त ।
कैदी बसन्द ते कोदी बसन्त ?

[2]झौंगरें - झौंगरें छौंकरी बद्दी,
मुण्ड[3] पनीरियां लैतियां[4] दब्बी ।
जम्मियै[5] बा ते लो नेईं दिक्खी,
जीन बि फिक्का, नुहार[6] भी फिक्की ।
खून पसीनेगी करनेयां पानी,
ओबी जाई लगदा बड्डें दी कानी ।
उठ्ठनां कियां ते उज्जनां[7] कियां,
चा[8] बसैन्तै दा बुज्जना कियां ?
जियां - कियां कट्टी छोड़ी दपैर,
सज्जां वाला डंग खड़ेथा दैन्त[9] !
कैदी बसन्त ते कोदी बसन्त ?

---

(1) दुधार गाय फाके है और बान्ज गाय हरे चारे खाती है
(2) सायादार वृक्षों ने साए फैला रखे हैं (3) नीचे (4) दबा लीं हैं
(5) पैदा होकर (6) रूप-रंग (7) उभरना (पनपना) (8) चाव
(9) दैत्य की तरह ।

कदें तां साड़ी बसन्त बी होग,
कोई मनुख बेकार नेईं रौग।
कुसैगी कुसैदी आर[1] नेईं रौग,
कुसैगी कुसैदा भार नेईं रौग।
घर घर फुल्ल ते घर घर ब्हारां,
खिड़ी खिड़ हसगंन मरद ते नारां।
पाई लैता असें गल्लै दा अन्त,
तुसें बन्नी रक्खी साड़ी बसन्त।
समझी जाओ मड़ो, हून भी बेला,
पी निं आखेओ एदे[2] परैन्त।

अजें निं आईदी साड़ी बसन्त !
कैदी बसन्त ते कोदी बसन्त !

———

(1) उपेक्षा (2) इसके बाद।

अड़ब बैड़ा

उठ बै कसाना नौजुवाना डंडा चुक्की लै,
नमा नमा ढग्गा[1] राह[2] लाना रस्सा तुप्पी[3] लै।

दुद्दें ते मलाईयें, खोयें - खलें कन्नें पाले दा।
चौगा[4] ए बदोरु खुल्ले खेत्तरें च चरे दा।
खूदां ते चरागे[5] बेल्ले चरी चरी फिटे दा।
चिट्टा मैला रंग, अक्खीं लाल, पिंडा[6] गिटे दा।

---

(1) बैल (2) रस्ते लगाना है (3) ढूंड ले (4) चार बरस का सांड
(5) हरा चारा (6) जिस्म गठा हुआ।

ताज[1] घाट मत्था, नीले सिंगें कन्ने जड़े दा ।
भरी दी जुआनी मने[2] बड़ा नशा चढ़े दा ।

कोल[3] नेईयों जान दिन्दा सूंकदा फुंकारदा ।
मड़े-रिड़े[4] डंग्गरें गी चुक्की पटकारदा ।

किक्करें फलाईयें कन्ने खैरदा[5] खराड़दा[6] ।
घाटें ते चुराहें गैलें गुच्छें बड़कां मारदा !

ए ई सरमायादार तगड़ा ते खड़ब[7] ई ।
दिक्खी सुनी हथ्थ पायां बैड़ा बड़ा अड़ब ई ।

स्हारें[8] कन्ने, जुगती ने बल्लें जुगड़ सुट्टी लै ।
उठ्ठ बै कसाना नौजुवाना डंडा चुक्की लै ।
नमां नमां ढग्गा राह लाना रस्सा तुप्पी लै ॥

---

(1) ताज जैसा (सुन्दर) (2) अत्यधिक (3) पास (4) दुर्बल (5) रगड़ता है (6) रौन्दता हुआ भागता है (7) अकड़ने वाला (8) धीरज के साथ ।

ए बैड़ा दूएं दी कमाई खान[1] गिज्जे दा ।
मस्त बनी लेटे दा, नां सुत्ते दा नां बिज्जे[2] दा ।
हल ते पंजाली दिक्खी सिंगदा[3] ते जरकदा ।
अम्बर[4] घुराड़े भरी शेरें बांगू नरकदा ।
भींगरियां[5] अक्खीं करी पिछें पिछें दिखदा ।
नित नित नमियां कनौतां[6] रोज सिखदा ।
हालियें बचारें कन्ने मुहां दा निं बोलदा ।
आपे बिच गुड़कदा ते जिंद जोर तोलदा ।
बड़ी जिंद कड्डनी ते बड़ा मुंड मारना ।
इन्ने सुखें नेइयों रस्सा जुगड़े[7] दा साहरना ।
इक्कला नि हथ्थ पायां, साथियें गी सदी लै ।
मिली जुली घेरा पान, डंडे सोटे कड्डी लै ।
हल ते पंजाली पैहले सोदी[8] ठप्पी ठुप्पी लै ।
उठ्ठ बै कसाना नौजुवाना डंडा चुक्की लै ।
नमां नमां ढग्गा राह लाना रस्सा तुप्पी लै ।

---

(1) खाने का आदी (2) न जागता है (3) सूंघता और झेंपता है (4) ऊंचे (आकाश की ओर देख कर) गुर्राता है (5) तिरछी (6) बनावटें (ढंग) (7) जकड़ा (बांधा) हुआ (8) सम्भाल कर ठीक ठाक करले ।

फब्बी[1] फब्बी पौन एदे क्याड़े दियां बक्कड़ां[2] ।
दिख कियां डंगे ढांदा मारी मारी टक्करां ।
बजिये[3] ते लम्भड़ें दे पापें वाली पंड ई ।
मन्न नैंयों शाहें दे रुपें वाली गंड ई ।
अक्खीं बिच लाल लाल धनै दी खुमारी आ ।
बेहल्ले[4] रेहियै खानीं बड्डी खचरी[5] बमारी आ ।
पिठ्ठी पर हत्थ फेरी बल्ले पुचकारेयां ।
फूं-फां करै चंगी डांगै[6] दी सुआरेयां ।
डांगे पर डांग चलै, दिक्खना निं सोचना ।
कन्ने[7] दा मरोड़ी मुंड पुंञ[8] गी दबोचना ।
इक्क बारीं हत्थ पाई फी[9] निं इसी छोड़ेयां ।
दग्गा[10] सुट्टी ढाई लैयां पिछड़ा निं द्रौड़ेयां ।
साथियें दी मजती[11] दे कन्ने नथ्थी नुथ्थी लै ।
उठ्ठ बै कसाना नौजुवाना डंडा चुक्की लै ।
नमां नमां दग्गा राह लाना रस्सा तुप्पी लै ।

---

(1) सज सज कर शोभा दिखाती हैं (2) सलवटें (3) चौधरियों (4) बेकार रह कर (5) बुरी आदत है (6) सोटे का प्रहार करना (7) कानों से (8) नीचे (धरती) की ओर दबाना (9) फिर (10) अगले दोनों पैरों को बान्ध कर (11) मदद से ।

बेहल्ले रेइयै जिनें कीती जिन्दू दी परौश[1] ऐ।
उन्दे गितै कम्म करना बड्डी भारी मौत ऐ।
बब्र मोये शाह बांगू इन्ने गरडाना[2] ई।
हथ्थ पैर त्रट्टने ते सन्न[3] बलडाना ई।
झक्केयां नि उस बेल्लै, नेईं घबरायां तूं।
हल्ल ते पंजाली एदे क्याड़े गी फसायां तूं।
दूए पासै बूरा संडा कस्सियै[4] जुटेरेयां।
चंग्गी मुट्टी बनें[5] दी तराम्बड़ी सदेरेयां।
रंबा डूंगा खोबिऐ ते ढंगें गी तुश्रारेयां।
नत्थ थम्मी लैंयां पिरी बैड़े गी ठुश्रालेयां।
जोरै कन्ने हथ्थी दब्बी, संडे गी मछेरेयां[6]।
खौरी[7] खौरी हक्कें इस बैड़े गी बलेरेयां[8]।
ओबी मौज लुट्टी बच्चू एबी मौज लुट्टी लै।
उठ्ठ बै कसाना नौजुवाना डंडा चुक्की लै।
नमां नमां ढग्गा राह लाना रस्सा तुप्पी लै।

---

(1) परवरिश (2) गले में गुर-गुर करना (3) सन्नीपात के रोगी की तरह चीखना चिल्लाना है (4) कम कर बांधना (5) 'बना' नामक वृक्ष की छड़ी हाथ में ले लेना। (6) उकसाना (7) तीखी तीखी (8) दिलासा देकर चलाना।

दादी ते मां

सिक्खें[1] मत्तें गूड़े सोचें आली सिद्दी सादी ।
लाडें-प्यारें आली चंगी मुन्नुएं दी दादी ।
बीते[1] दे रवाजें-रीतें पीढ़ियें दी घास ।
झुरे[3] मुरे चेहरे बिच जींदा[4] इतिहास ॥
बुड्डिया दा मान सारे छन्न[5] ते गुआंड ।
घरै बिच दादिया दी "सुप्पर[6] कमांड" ॥

(1) सीख मत देने वाली (2) पुराने (3) झुर्रियों वाले (4) जीवित (अंकित) (5) पास-पड़ोस में (6) Super-command (प्रमुख शासन)

लख्ख नुकसान दीदे[1] करी नस्सी जंदा।
दादी दिया लाडलिया गोदा छप्पी जंदा॥
अम्मां बी त्रांदिये[2] ते बापू बी संगोदा[3]।
दादी दिया गोदा पुज्जी मुन्नू नैंइयों थोंदा[4]॥
खट्टा पर बैठी दादी टेरदी ऐ टेरना[5]।
चार चफेरै मुन्नू पांदा रौंहदा[6] घेरना॥
तत्तो[7] बत्तो मुन्नुए दी जीब करी जन्दी ऐ।
अपने खयालें दादी हूरे[8] भरी जन्दी ऐ॥
लोरियां बी दिन्दी ऐ ते बीबियां खुलांदियै।
ध्रुब प्रहलाद दियां कहानियां सुनांदियै॥
समझे बगैर ओबी हूरे भरी जंदा ऐ।
दादिया दे बोलें बोल पूरे करी जंदा ऐ॥
मुन्नू दियें खेडें कुतै तंद[9] त्रुट्टी जंदी।
मुन्नू रुस्सी[10] जंदा कदें दादी बुस्सी[11] जंदी॥

---

(1) शरारतें करके भाग जाता है (2) डरती है (3) सकुचाता है (4) मिलता (5) अटेरन (6 घेरे डालता रहता है (7) तुतलाती बातें (8) हामी भरती जाती (9) धागा टूट जाता है (10) नाराज़ हो जाता है (11 ठुनक जाती है।

इसी बी निं छेड़ना ते उसी बी निं छूना ।
एदे बिच जीजू[1] ऐ ते ओदे बिच टूना ॥

दादी बस टोका - टोकी करदी गै रौंहदी ।
मुन्नुएँ दी धींगा-धींगी[2] चलदी गै रौंहदी ॥

अपनिये खेडें मुन्नू बैठा रौंहदा कोल ।
मुन्नुया दा रुन-भुन[3] दादिया दी रोहल[4] ॥

मुन्नू बिना दादिया दी टेर खुल्ली जंदी ।
दादी बिना मुन्नुएँ गी खेड भुल्ली जंदी ॥

सिख्खां मतां झिड़कां ए रोसे ते मनौनियां ।
दादिया दे बाज[5] भला कुथ्थुआं[6] दा थोनियां ॥

दादी बाज बचपना बड़ा गै गरीब ऐ ।
दादिया दा होन इक दख्खरा[7] नसीब ऐ ॥

---

(1) एक डरौना जीव (2) हठपूर्ण हरकतें (3) कलरव (4) रौनक (5) दादी के बिना (6) कहां से मिलेंगी (7) एक निराला ।

अल्हड़[1], जुआन कम्में[2] रुज्जा दा सबा।
ममता दी मूरत, ए मुन्नुए दी मा॥

छाती बिच दुद ऐ ते अक्खीं बिच चाह।
मनै बिच हिरखै[3] दा सागर अथाह॥

जिन्दू बिच फुरती ते कम्मै बिच हत्थ।
दिल कुतै अग्गें-पिच्छें मुन्नुए दै कच्छ॥

बिन्द[4] कुतै छेड़ जा छड़ूका होई जंदा।
मन्नू नैं[5]नां डिग्गेया धड़का[6] होई जंदा॥

मक्खी दियें भनकें भड़ा उठ्ठी जंदे।
मुन्नू कियां रोया, ए रुआ[8] उड्डी जंदे॥

इक्कै नेया घाट ऐ ते इक्कै नेई सूरत।
मुन्नू बस्स अम्मा दी गै निक्की नेई सूरत॥

मुन्नू दे परानें बिच अम्मां दे परान।
अम्मां दिया जिन्दू बिच मुन्नूए दी जान॥

---

(1) भोली (2) काम में लगे रहने की आदत (3) प्यार का (4) ज़रा कहीं आवाज़ होते ही (5) कहीं मुन्नु तो नहीं गिरा 6) मन धड़क उठता है। (7) होश उड़ जाते हैं (8) साँस रुक जाती है

अम्मा[1] दा गलान कुतै कन्न चड़ी जंदा ।
मुन्नूए दे भादा बस चन्न चड़ी जंदा ॥
खेड भुली जंदी ऐ खड़ालीं भुली जंदियां ।
दादी दियां लाडलियां गालीं भुली जंदियां ॥
सारे किछ सिक्खां ते सखाले भुल्ली जंदे ।
बीबी भुली जंदी ऐ ते आले भुली जंदे ॥
औंदे-जंदे[2] अक्खीं[3] कन्ने अक्ख भिड़ी जंदी ।
मुन्नू दी ते अम्मां दी बसन्त खिड़ी जंदी ॥
मुआं दा निं बोलै, अक्खीं[4] बिच्चें छोड़ै आखी ।
अजें कियां लैना बच्चू ! कम्म पेया बाकी ॥
इनें मजबूरियें गी मुन्नू जंदा[5] ताड़ी ।
मुंह जंदा [6]ठुनकी, तुहार[7] लैंदा चाढ़ी ॥
दादी दियें गल्लें जेड़ा तैंथियां[8] करोड़ै ।
अम्मां दियें अक्खीं बिच अर्थ पढ़ी छोड़ै ॥

---

(1) अम्मां की आवाज़ कहीं कान में पड़ जाती है तो (2) आते जाते (3) आँख से आँख लड़ जाती है (4) आँखों के इशारे में ही कह दे (5) समझ जाता है (6) मुँह चढ़ जाता है (7) सूरत क्रोधयुक्त हो जाती है (8) सवाल पर सवाल पूछता है ।

दादी गल्लें गूड़ियें दे भेत बी निं जानै ।
अम्मा झट मुँए परा मरजी पछानै ॥
हथ्थ धोई बौंदी[1], मुक्की[2] जंदा कम्म काज ।
अम्मा दिया गोदै बिच मुन्नुए दा राज ॥
मन्नी[3] लेया मुन्नुए गी दादी बी नसीब ऐ ।
अम्मा, पर दुनियां दी बख्खरी गै चीज ऐ ॥
दादी दी बी लोड़[4] ऐ अम्मा दी बी लोड़ ।
दौनें बड़भागिनीं गी मुन्नू दी बी थोड़ ॥
इक पासै मम्मा[5] ऐ ते इक पासै [6]बीबी ।
इयै इन्ना फ़र्क ऐ ते इन्नी गै [7]करीबी ॥
हिन्दी दा ते डोगरी दा झगड़ा गै कैदा ।
दादी दा ते माऊ दा मुकाबला गै कैदा ।
हिन्दी साड़ी दादी ऐ ते डोगरी सै मा ।
[8]दादी थार दादी ऐ ते माऊ थार मा ॥

---

(1) बैठती है (2) समाप्त हो जाता है (3) मान लिया (4) ज़रूरत है (5) एक तरफ़ दूध है (6) मिठाई (7) समीपता (8) दादी अपनी जगह है और माँ अपनी जगह है ।

इक छड़ा इकल्ला - जमात करामात ऐ

इक नेइयों बड्डा, बड्डी जनता जमात ऐ।
इक छड़ा इक्कला, जमात करामात ऐ!

इक्कले[1] हंकारै बिच फुट्ट खुट्ट दोबदा[2]।
किन्ना बड्डा बनै कोई भाईयें[3] कन्ने सोबदा।
भाइयें दे प्यार, सिर चुक्केया दा ताज ऐ।
खिंडै[4] जो जमाती कोला बेसुरा साज ऐ।

---

(1) अकेले (खुदपसन्द) अंहकार में (2) द्विविधा (3) भाइयों के साथ शोभा पाता है (4) अलग हुआ।

तारे[1] पिच्छे चन्न ऐ तां चन्नैं पिच्छे तारे ।
सारे कन्ने इक ऐ तां इक कन्ने सारे ।

होरने[2] दी मन्नै नेईं, ते अपनी मनांदा जा ।
होरने दी सुनै नेईं ते अपनी चलांदा जा ।

जनता गी भोन्दू[3] मिथि बनी जन्दा लाट[4] ऐ ।
इयै सिद्धा सादा 'डिकटेटरी' दा घाट[5] ऐ ॥

———

जनता दा फैसला ऐ, आखा[6] भगवान दा ।
सच्चा नेता उयै जड़ा देयै उसी मानता[7] ।

असल "जम्हूरी" साथी इयै दसतूर[8] ऐ ।
एदे कोला अग्गें-पिच्छें हटना कसूर ऐ ।
जनता दे फैसले दा करदा जो घात ऐ ।
ओदे गिते कुतै कोई रू ना रेआत ऐ ।

———

(1 तारों के कारण (2) दूसरों की (3) बुद्धू समझ कर (4) मुँहज़ोर (5) नमूना (6) आदेश (7) स्वीकृति (8) दस्तूर (तरीका) ।

हिंद कश्मीरा दा ते ओदी कश्मीर ऐ।
खीरा बिच खण्ड जियां, खण्डा कन्ने खीर ऐ।

जनता दा फैसला ए पत्थर लकीर ऐ।
इयै पैहले कीता इयै करना अखीर ऐ।

जड़ा असें कीता उयै पुखता "अल्हाक"[1] ऐ।
थोई सामराजियें गी एबी भर्ली मात ऐ!

इक नेइयों बड्डा, बड्डी जनतां जमात ऐ।
इक छड़ा इक्कला, जमात करामात ऐ।

---

(1) इलहाक (राजनीतिक सम्बन्ध)।

कम्म करना सिख देसा ! उठ अड़ेया उठ ओ !

कम्म करना सिख देसा ! उठ अड़ेया उठ ओ !
कम्म कीते बाज[1] तेरा मिटना नेईं दुख ओ !
शैहरुये[2] दे चुटकलें ते लीडरें दे लशकरें
कागदें दे अक्खरें ते कुर्सियें दे तजकरें,
नेईं जुड़दे[3] कपड़े ते नेईं मिटदी भुख ओ !
कम्म करना सिख देसा ! उठ अड़ेया उठ ओ !

---

(1) बिना (2) शहरियों के चुटकलों से (3) मिलते ।

मोटरें दी घूंक सुनियै तूँ कैसी [1]फुल्ले ऐं,
हल ते पंजाली माल्लै-डंगरैं गी भुल्ले ऐं,
लशकरें[2] नेईं कनक किरदी फलदे नेईं रुख ओ !

कम्म करना सिख देसा ! उठ अड़ेया उठ ओ ।

जिन्द मारे बाज तेरा कक्ख[3] नेईयों सौरना,
कम्म कीते बाज नेईं परमातमा बी [4]बौड़ना,
बी[5] चंगे आन, डूंगा खेतरें गी पुट्ट ओ !

कम्म करना सिख देसा ! उठ अड़ेया उठ ओ ।

सुन्ने दे सतुल[6] गोआ[7], पत्थी-पत्थी फूकदी,
भाग मंदे दस्सदी ते [8]किसमती गी कूकदी,
अकली दी मार, नेइयों देवतें दा खुट्ट ओ !

कम्म करना सिख देसा ! उठ अड़ेआ उठ ओ ।

---

(1) तुम क्यों खुश हो रहे हो (2) लकचरों (भाषणों) से (3) कुछ भी नहीं होगा (4) मिलना (5) बीज (6) समान (7) गोबर (8) भाग्य को कोसती है ।

तूँ की गरीब तुगी केड़ी गल्ला थोड़ ओ,
मनै बिच हुड़क[1], तेरी बामें बिच जोर ओ,
डंगरें गी पाल, दुद्द पी, मौजां लुट्ट ओ !

कम्म करना सिख देसा ! उठ अड़ेयां उठ ओ ।
कम्म कीते बाज तेरा, मिटना नेईं दुक्ख ओ !

---

(1) उत्साह ।

मञ्जलै गी पुज्जना तां बिना रुके चली जा।

मंजलै[1] गी पुज्जना तां बिना रुके चली जा।
दुक्खें ते मसीबतें गी हस्सी हस्सी जरी जा।

———

पंथ लोक-सेवा वाला छुरियें दी धार ई।
चौन्नें पासें घना काला काला अन्धकार ई।
न्हेरा[2] दूर करना तां दिए बागू जली जा।
दुक्खें ते मसीबतें गी हस्सी हस्सी जरी जा।
मंजलै गी पुज्जना तां बिना रुके चली जा॥

(1) मंज़िल तक पहुँचना है तो (2) अन्धेरा।

इनें राहें बिच कोई बिरले गै टुरदे ।
पीड़ भामें[1] किन्नी होऐ पिच्छें नेईंयों मुड़दे ।
ठोकरें ते कैंकरेंगी पैरें खल्ल मली जा ।
दुक्खें ते मसीबतेंगी हस्सी हस्सी जरी जा ॥
मंजलैगी पुज्जना तां बिना रुके चली जा ॥

के-होआ[2] कम्म तेरा कठन कठोर ऐ ।
एदे गितै बस छड़ी हिम्मतै दी लोड़[3] ऐ ।
दुक्खें दिया अग्गी बिच सुन्ने-वांगू[4] तपी जा ।
दुक्खें ते मसीबतें गी हस्सी हस्सी जरी जा ।
मंजलैगी पुज्जना तां बिना रुके चली जा ॥

——:o:——

---

(1) चाहे कितनी हो (2) क्या हुआ (3) ज़रूरत है (4) सोने की तरह ।

तुन्दा डुग्गर ते स्हाड़ा डुग्गर

चुड़ेपुड़े[1] दा फोसड़[2] पुलखर[3], तुन्दा[4] डुग्गर मुक्कै करदा ।
नमां नवेला साड़ा डुग्गर, सिर अपना ऐ चुक्कै करदा ।
खुदगरजी दे ताजें वाला, धाड़ें दे ओ साजें वाला ।
बजियें[5] आलो चुब्बें वाला, जुलमा आली गुब्बें वाला ।
बड्डे चक्क जगीरें वाला, मुल्लें - पंतें पीरें वाला ।
भागें ते तकदीरें वाला, जनता दे गल लीरें[6] वाला ।
अपने जुल्में खादा जिन्दगो, प्राण चले दम छुट्टै करदा ।
चुड़े पुड़े दा फोसड़ पुलखर,
तुन्दा डुग्गर मुक्कै करदा ।

---

(1) जीर्ण-शीर्ण (2) फुस फुसा (3) खोखला (4) आपका (स्वार्थी लोगों का) (5) चौधरियों वाला (6) फटे कपड़ों ।

ओ डुग्गर हा धक्केशाही, दावें, कार-बगारें वाला।
तुसेंगी सौंपे मुलख-मालकी, असेंगी छप्पर तारें[1] वाला।
मरन लगा तां मरो भला हुन, अस की चेता[2] करचै ओदा।
सदियें थां। गै करदे आए, अज्जै[3] तगरा मरना ओदा।
पिट्टन[4] ओ जिनें कड़छे[5] खादे, स्हाड़ा के सिर दुक्खै करदा।
चुड़े पुड़े दा फोसड़ पुलखर,
तुन्दा डुग्गर मुक्कै करदा।

ओ डुग्गर हा ऐशां करदे, बेलड़[6] दस्सें-बीएं[7] वाला।
ए डुग्गर ऐ जीन्दे जगदे, लक्खें लक्खें जीएं[8] वाला।
ओ डुग्गर हा होन्दे-सोन्दे, औतर[9], उरड़[10], कबीएं[11] वाला।
ए डुग्गर ई मिहनतकश, मजदूरें पुतर-धिएँ वाला।
ओ डुग्गर हुन होए-सोए, चुड़े पुड़े दा सुक्कै करदा।
ए डुग्गर ई होनहार इक, नमा डूर[12] जन फुट्टै करदा।
चुड़े पुड़े दा फोसड़ पुलखर,
तुन्दा डुग्गर मुक्कै करदा।

---

(1) जिसके अन्दर से भी तारे दिखाई दें (2) स्मरण (3) आज तक (4) रोए पीटें (5) गुलछर्रे उड़ाए हैं (6 बेकार (7) दस-बीस भाग्यशालियों का (8) जीवों (9) सन्तान हीन (10) बेढंगे (11) बुरे लोगों वाला (12) अंकुर की तरह।

ओ दिक्खो धारें दे पिच्छें, चढ़न लगा ऐ नमां ध्याड़ा[1] ।
नमें जुगै दी नमी लोई बिच, खिड़न लगा ऐ डुग्गर साड़ा ।
ए डुग्गर जनता दा डुग्गर, ए डुग्गर दुनियाँ दा साथी ।
ए डुग्गर सारें दा हेती[2], ए डुग्गर अमनै दा साथी ।
ओ दिक्खी लौ आकड़ मारी, गुद्दड़ै[3] चा सिर पुट्टै करदा ।

नमां नवेला साड़ा डुग्गर ।
सिर अपना ऐ चुक्कै करदा ।

इस डुग्गर बिच रोब दबदबे, जात-पात दे पाप निं चलने ।
कच्ची लुट्ट खसुट्ट निं रौहनी, फोके[4] ठाठ-बाट निं फलने ।
इक घड़े ने दुए उप्पर मल्लो-मल्ली[5] सवार निं होना ।
कम्म-कोस[6] उच्चे-सुच्चें[7] गी, इत्थें कोई थार निं थोना ।
तां लोई दियां किरनाँ दिक्खी, न्हेरा टंडा कुट्टै[8] करदा ।

चुड़े पुड़े दा फोसड़ पुलखर ।
तुन्दा डुग्गर मुक्कै करदा ॥
नमां नवेला साड़ा डुग्गर ।
सिर अपना ऐ चुक्कै करदा ॥

---

(1) दिन (2) हितु (3) दरिद्रता की गोद में से (4) झूटे (5) वारी वारी से (6) कामचोर (7) अपने आपको ऊंचा और पवित्र समझने वाले (8) पेट पर हाथ मार रहा है ।

डोगरी संस्था के प्रकाशन

★———★

	नाम	मूल्य
1.	जागो डुग्गर (कविता)	.../8/-
2.	नमियां मिञ्जरां (कविता) श्री मधुकर	.../8/-
3.	भड़ास (कविता) पं॰ शम्भु नाथ	.../8/-
4.	भर्तृहरि-नीतिशतक (डोगरी अनुवाद) रामनाथ शास्त्री	.../8/-
5.	खारे मिट्ठे अथरूँ (लोक गीत) सुश्री सुशीला सलाथिया	.../8/-
6.	नमीं चेतना (दूसरा अंक)	.../8/-
7.	नमीं चेतना (तीसरा अंक)	.../8/-
8.	गुंगे दा गुड़ श्री स्वामी १०८ ब्रह्मानन्द जी तीर्थ	.../4/-
9.	दादी ते मां (कविता) दीनू भाई पन्त	.../4/-
10.	फौजी पिनशनर (कविता) तारा स्मैलपुरी	.../4/-

प्राप्ति स्थान :—

कार्यालय—डोगरी संस्था

पटेल बाज़ार, जम्मू

विजय प्रिंटिंग प्रेस मोती बाज़ार, जम्मू